प्रश्न:- रीतिकालीन काव्य में रीतिमुक्त कवियों का स्थान बतायें?

उत्तर शेषभाग:-

१. सौन्दर्य सम्बन्धी दृष्टिकोण में भेद —

इन कवियों का सौन्दर्य सम्बन्धी दृष्टिकोण रूप के प्रभाव के प्रति जागरूक एवं सचेत हैं। इन कवियों की रचनाओं में नेत्र-चितवन तथा संयोगपरक आमोद-प्रमोद का चित्रण बहुत कम हुआ है। सौन्दर्य का स्थूल वर्णन न करके उन्होंने व्यापक सौन्दर्य चेतना का ही आँकलन किया है। सर्वाधिक भंगिमापूर्ण, रससिक्त और आकर्षक चित्र रीतिमुक्त कवियों में घनानन्द के हैं, क्योंकि बोधा विरह-वेदना में रत थे तथा आलम अपने को रीति-परम्परा से मुक्त नहीं कर पाये थे। घनानन्द ने अपने प्रियतम के स्थूल अंगों, उनके आकार और व्यापार का वर्णन कम किया है तथा सौन्दर्य एवं गुणों का अधिक किया है। अंग-प्रत्यंग के उपमानों की अपेक्षा उन्होंने प्रियतम की भंगिमाओं, तिरछी चितवन, प्रेमपूर्ण वार्तालाप, सरस मुस्कान आदि का चित्रण अधिक किया है। उनके चित्रों में इन्द्रियमोहकता न होने पर भी मोती की तरल कान्ति की तरह कोमलता है, चटकीलापन नहीं।

रीतिमुक्त कवियों की दृष्टि अंग-वर्णन की अपेक्षा सामूहिक छवि के अंकन पर अधिक रही है। इन्होंने आलिंगन, चुम्बन, सुरति, सुरतान्त आदि का कुरुचिपूर्ण वर्णन रीतिबद्ध कवियों की तरह नहीं किया है। इनके काव्य में खण्डिता नायिका का वर्णन, सौत की कलह, उनका संघर्ष अथवा मान-सम्मान प्रसंगों को लाने के लिए नहीं, अपितु प्रेम-वैषम्य दिखाने के लिए हुआ है। रीतिमुक्त कवियों की उक्तियाँ भी रीतिबद्ध कवियों की

उक्तियों से भिन्न हैं। रीतिबद्ध कवियों ने पत्नी के संसर्ग से नायक के शरीर पर दिखायी देने वाले चिह्नों का वर्णन किया है, जैसे भाल पर महावर, अधरों पर पान की पीक, आँखों के अंजन (काजल) की रेखा, छाती पर माला के चिह्न आदि। खण्डिता के हृदयगत भावों का भावपूर्ण चित्रण उन्होंने नहीं किया है। इनकी उक्तियों में हृदय की पीड़ा को व्यक्त करने की अपेक्षा वाग्विलास का वर्णन अधिक हुआ है। रीतिमुक्त कवियों ने नायक के शरीर पर उभरे चिह्नों को प्रस्तुत करने के स्थान पर उसके हृदय के भीतर झाँका है तथा इसकी मर्मव्यथा प्रकट की है। वे खण्डिता के चिह्न का संकेत करने के उपरान्त ही तुरन्त उसके भावों को प्रकट करने में लग जाते हैं। इन उक्तियों के संख्या में कम होने के कारण उनका मन इनमें नहीं रमा है।

इन कवियों ने संयोग श्रृंगार के स्थूल-रूप को भी महत्व दिया था। प्रथम तो संयोग के अवसर ही कम आते हैं और दूसरे जब आते भी हैं तो प्रिय की सौन्दर्य-आभा से दिशाएँ अत्यधिक आलोकमयी हो जाती हैं, जिसके कारण कुछ दिखाई नहीं देता तथा प्रेमी भ्रम में पड़ जाता है।

संयोग के क्षणों में भी कवि की दृष्टि बाह्य दृश्य पर न होकर मन की उमंग और उल्लास के क्षणों का चित्रण करने में अधिक रही है, क्योंकि न तो पायल बजती है, न चूड़ी खनकती है तथा न ही सिसकियाँ सुनायी देती है। शारीरिक मांसलता की गंध कम होते हुए भी स्पर्शेन्द्रिय प्रभावोत्पादकता कम

नहीं है, रीतिमुक्त कवियों के काव्य में रीतिबद्ध कवियों के समान विनोद के प्रसंग की क्रीड़ाओं का उल्लासपूर्ण चित्रण भी मिलता है। इसी प्रकार होली के वर्णन में रंग, गुलाल तथा केसर आदि चित्रण कम तथा नायक-नायिका के हृदयोल्लास का चित्रण अधिक है।

पता -
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)

मो०न० - 7909046087
दिनांक - 11.02.2022